64-ാമത് കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം, തൃശ്ശൂർ
തിയ്യതി....................
പ്രോഗ്രാം കമ്മിറ്റി

आग से ज्वलित हूँ - हारेगा न कभी।

हार - ये वाक्य और हालत उसकी ज़िंदगी में अनेक बार हुआ है। लेकिन वो हार नहीं मानेगा, ~~भ~~ कभी नहीं। क्योंकि, वो आख़िर एक औरत है, आग से बनी हुई और एक ख़तरनाक औरत। उसको कभी क़ुबूल नहीं पराजय।

हिंदुस्थान की मिट्टी से ज्वलित हुआ एक गाँव। साल और वक्त तो बदलने की बावजूद भी, सोच बदलने में थोड़ी दिक्कत है आख़िर।

उसकी नाम थी दुर्गा मेहर। जी हाँ, दो धर्मों का एक ख़ूब मुलाकात। ज़िंदगी ने उसकी और हार की खने पत्थरें फेंक के जा रहे थे। पर दुर्गा ~~को~~ ~~पर~~ ~~पत्थरों~~ ~~को~~ ~~कभी~~ ~~नहीं~~ हारने वालों से नहीं है। ये उनकी कहानी है...

" तुम्हारी हिम्मत ~~कैसी~~ कैसे हुई की तुम मेरे मना करने के बाद भी ~~स्कूल~~ बाहर जाओ? वो भी कॉलेज में?" पापा ने चिल्लाया। "लोग क्या कहेंगी दुर्गा?"

(Note: This page will be scanned to publish the article in schoolwiki. So, Write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf).

"एक बेशरम लड़की है वो, बिलकुल उसकी माँ-बाप की तरह" बुआ ने अपनी पड़ोसी से फरमाई। घर की हालत तो पुराने सोच और संवेदना से भरा हुआ था। समाज ने उसको हराने की कोशिश की। पर वो कभी हार न माना।

दुर्गा की अंदर एक ज्वलित आग थे। जो कुछ भी हो जाता वो दुबारा अपनी पैरों पर खड़ा होगा। दुबारा इस पराजय को निपटा देगा और दुबारा वो ऊँचाई पार देगा। और इस अगन की ज्वलन से वो अपनी पढ़ाई पूरी की। शायद हरेक औरत का सपना है ये, जिनसे समाज अपना हक छीन रहा हो।

दुर्गा का बाप हिंदु धर्म का था और माँ मुसलमान था। और दुर्गा इन दोनों धर्मों का एक सुंदर मुलाकात था। पर समाज को इस मुलाकात की सुंदरता को कैसे समझ सकता है?

दुर्गा से अपनी पंख छीन लिया था, सपने छीन लिया था, खुशी छीन लिया था, जीने का हक छीन लिया था। ~~टूटे~~ ~~र~~ ~~हुए~~ ~~सपनों~~ सपनों के टूटे हुए मलबे लेकर वो चलते रही.... न चाहे जो कुछ भी हो जाए, हार वो ~~भ~~ कभी नहीं मानेगा।

समय बदला, समाज बदला, अब आगई उसकी ज़िंदगी में एक नया खुशी और गम।

"हमारी दुर्गा की शादी की उम्र हो गई है" माँ ने बुआ से बोली। "अरे, दुर्गा को कौन सा खानदान खुबूल करेगा? वो पढ़ी-लिखी है, वो कमा रही है, वो बहुत चल्लाकी है ... ऊपर से उसकी माँ-बाप, ~~का~~ यानी हम लोगों का धर्म तो ...... है खैर, दुर्गा कभी एक आदर्श बहू नहीं ~~बन~~ बन सकता। उसकी शादी का ~~सपनों~~ सपने के बारे में तो भूल जाओ।"

दुर्गा ~~ने~~ ये सब सुन रहा था। उन्होंने कुछ नहीं फरमाई, बस हँसते रही... क्योंकि ऐसे सोचों को खामोशी है एक बेहतर जवाब।

64-ാമത് കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം 2026 ജനുവരി 14 - 18 · തൃശ്ശൂർ

Item Code: 962 Participant Code: 039

64-ാമത് കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം തിയ്യതി.................. ★ പ്രോഗ്രാം കമ്മിറ്റി ★

दुर्गा का मानना था की जीवन साथी धर्म से, जाती से नही चुनना है। ~~अमुक बो नक्क~~ ~~इंस~~ सच्चे दिल और इंसान है.... बस।
~~इस~~ इस बार किसमत और खायनाद उसके साथ थे। वो खुद ही ढूँढ लिया अपनी जीवन साथी को ... धर्म के आधार पर नही, ईसानियत की आधार पर ~~।~~ - अर्जुन।

"हम एक खतरनाक दुनिया मे जीती है बैठी... यहा इंसान से ज्यादा, धर्म को, जाति को और ~~झूठे~~ सोचो को ज्यादा प्रधान है। अब तुम्हे शादी का उम्र हो चुकी है। तुम अभी पढ़ी - लिखी है, तुम होशियार है मेरी बैठी। हमारी मोहल्ले की हर छोटी - छोटी लड़कियाँ ~~तुम्हा~~ को तुम पर गर्व है... मुझे भी। तुम शेरनी है, मेरी बच्ची..। माँ की इस शब्दें दिल की हर कोने - कोने तक शामिल है। 'हराई' को हारकर दुर्गा आगे बढ़ी... पर... जिंदगी की सड़क सीधी नही है।

रेलगाड़ी का चल - चल ध्वनी ~~अ~~ दुर्गा की कानो मे बसी। उन्होंने आँखे खोल दी... ~~उसकी~~ पास उसकी पती, अर्जुन शामिल थे।

(Note: This page will be scanned to publish the article in schoolwiki. So, Write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf).

"अरे हम कब पहुँचेंगे?" दुर्गा ने शिकायत की।
"सबर रखो, सबर रखो... हम अभी पहुँचनेवाले हैं।" अर्जुन ने हँसकर बोला। "आपको पता है? कश्मीर आना मेरी ज़िंदगी का सबसे बड़ा सपना था। बचपन में मुझे लगा की वो सपना न मुमकिन है। पर मैंने अपनी हर चुनौतियों का सामना किया, पढ़ा, पैसा कमाया.. और आपसे मिला... ये मेरी ज़िंदगी का सबसे अच्छा दिन है। मुझे खुद पर इस बात का गर्व है कि, मैंने कभी हार नहीं माना।" अर्जुन की आँखों में प्यार और गर्व थे।

रेलगाड़ी चलती रहा... मौसम बदल रहा था और बर्फ उन दोनों साथियों को लिपट रहा था। धीरे-धीरे वो अपना निर्णय स्थान पहुँच रहा था... कश्मीर - हिंदुस्थान की जन्नत।

उस हिंदुस्थान की बेटी को क्या पता की, जन्नत को 'सजाने' के लिए "शैतान" आएगा? उस होशियार औरत को क्या पता था की दुबारा ज़िंदगी उसको हराने की कोशिश करेगा?

Item Code: 952 Participant Code: 039

~~हाथों हाथों वो दोनों , जीवन साथियाँ~~

हाथों - हाथ जोड़कर , वो ~~दोन~~ दोनों जीवन साथियाँ चल रहा था। ऊँचे पहाड़े , बर्फी मैसम, कोमल ~~ठंडी~~ ठंड हवा ... है कश्मीर इस जगह का जन्नत। बर्फ की प्यारी - प्यारी बूँदें उन जुड़े हुए हाथों का सजा रहा था।

"~~[illegible]~~ "हम कहा जा रहे हैं?" दुर्गा ने आश्चर्य होकर पूछा। "~~अरे [illegible]~~ बहुत खास जगह" अर्जुन ने जवाब दी। "अरे बताओ न" दुर्गा ने शिकायत की। "अच्छा - ठीक - ठीक ... बता दूँगी"। हम जा रहे हैं, पहलगाम"। ~~अरे~~ "अरे मैंने बहुत बार सुनी है पहलगाम की बारे में, आप सच में मुझे वहां ले जा रहे हैं?"

"क्यों, ~~मुझ~~ तुम्हें मुझसे यकीन नहीं है?" अर्जुन ~~से~~ ने चेडाई। "~~अरे~~ अरे, उससे पहले..." दुर्गा ने ~~बोली~~ बोली। "क्या?" पति ने पूछा। "मुझे सिंधूर लगानी है ....."।

उसको क्या पता ~~[illegible]~~ था की, किसमत उससे अपनी ~~सिंदूर~~ सिंधूर छीन लेगा ... उसको दुबारा और हराने की खोशिश करेगा ...।

(Note: This page will be scanned to publish the article in schoolwiki. So, Write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf).

Item Code: 952
Participant Code: 039.

गुलाबों की ~~खुशबू~~ खुशबू और ठंडी मलयानिल के लहरें उन दो जीवन साथिओं को स्वागत की।
हर पल खुशी का और प्यार का स्मरण था।
किसमत ने उस कई बार हराने की कोशिश की, पर यही है वो, अभी भी मुसकुराकर।
~~उस~~ ज़िंदगी गम और खुशी का एक संतुलन है।
~~वह~~ और उस शाम वो संतुलन का विनाश होने वाला था।

अपनी खुशियों को बाँटकर, खोका ~~समी~~ समितियों को पार कर वे दोनो पल बिता रहा था।
~~अचानक~~ ज़िंदगी का सबसे अच्छा पल माननेवाला वक्त सबसे बुरा होने वाला था।

अचानक एक आवाज़ ... सब जगह चिल्लाक, लोग इधर-उधर ~~ब~~ भाग रहा था ...
इस सुकून अंतरीक्ष को अचानक क्या हुआ?
उन दोनो दंपतियों को कोई अंदाज़ा नहीं था की उसकी ज़िंदगी अब बदलने वाली है।
किसमत एक बार और दुर्गा को हराने की कोशिश कर रही थी।

(Note: This page will be scanned to publish the article in schoolwiki. So, Write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf).

"आतंगवादी, भागो..." । लोग ज़ोर से चिल्ला रहा था । बेला को अर्जुन ने अपने बाहों में लाया । गोली की ज़ोर ध्वनी उस पूरी ज़मीन को हिला दिया । नफरत के गुठलियाँ बो रहे थे हर ज्गह ।

"~~मुझे~~ नही पता की अगर हम ~~यहाँ से~~ ज़िंदा रहेगा... लेकिन एक बात मत भूलो, तुम हारने वालों से नहीं है ... तुम जीतने वालों से है ... लड़ो दुर्गा, मैं रहूँ या न रहूँ, ~~तुम~~ तुम्हे ~~हा~~ हारना मंज़ूर नही है । किसमत को तुम्हे मत हराने दो।" बस । खून । खामोश ।

जब दुर्गा ने आँखें खोला तो, जो दृश्य, वो कभी देखना नही ~~चाहता~~ देखना चाहता था, वो उसकी आखों के सामने थमक उठी । उसकी सिंधूर छीन ली गयी थी.... ~~किसमत उसे हराचा?~~ हिंदुस्थान की हर औरत की सिंधूर छीन ली गई थी। पर वो हारने वालों से नही ।

क्या छीन का रात था.... उस वार ~~के~~ आज से एक महीना हो गयी थी । दुर्गा ने दिया जलाई, वेदध रखा, पर आँसू न बहा....

(Note: This page will be scanned to publish the article in schoolwiki. So, Write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf).

Item Code: 952 Participant Code: 039.

वो अभी भी हँस रहे थे ... ~~क्योंकि~~
न चाहे ज्यो कुछ भी हो ज्यादा हार मानना उसको
मंजूर नही थे ... वो आज बड़ा ... हँसकर,
ताकतवार बनकर ... है आख़िर वो हिंदुस्थान
की शेरनी !

(Note: This page will be scanned to publish the article in schoolwiki. So, Write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf).